सत्र 2024–25

Madhyma Diploma in Performing Art (M.D.P.A.)
Final Year
Regular

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	66

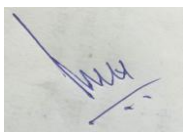

सत्र 2024–25

नियमित परीक्षार्थियों हेतु

मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष
तबला (शास्त्र)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

तबला वादक के गुण–दोष। काल, मार्ग, क्रिया, तथा अंग की संक्षिप्त जानकारी। पिछले पाठ्यक्रम में सीखे गये विभिन्न रचना प्रकारों को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।

इकाई 2

मुगल काल से वर्तमान काल तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास तथा तबले के घरानों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 3

गीत के अवयव–स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग, की जानकारी। निम्नलिखित पर टिप्पणियां–परन (चक्करदार तथा फरमाईशी), उठान, गत, स्वतंत्र वादन, साथ–संगति, खुले तथा बन्द बोल।

इकाई 4

पिछले पाठ्यक्रमों के तालों के अतिरिक्त धमार तथा पंचम सवारी (15 मात्रा) तालों को वर्णन सहित ठाह, दुगुन तथा चौगुन में लिपिबद्ध करना। एकताल, झपताल एवं रूपक तालों के ठेके तिगुन की लयकारी में लिपिबद्ध करना।

इकाई 5

विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तालिपि पद्वति की संक्षिप्त जानकारी तथा पाठ्यक्रम के तालों को पलुस्कर तालिपि पद्धति में लिपिबद्ध करना।

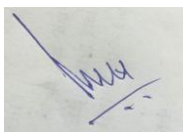

सत्र 2024–25

नियमित परीक्षार्थियों हेतु

मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष

क्रियात्मक

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल व झपताल में लहरे के साथ पेशकार, कायदे, रेले, मुखड़े, तिहाई, तथा सरल परन, चक्करदार परन का स्वंतत्र वादन तथा हाथ से ताली देकर पढ़न्त।
2. त्रिताल में :– (अ) बनारस घराने का कोई एक कायदा चार पल्टे, तिहाई सहित।
   (ब) धाऽतिर किटतक धिरधिर किटतक धाऽतिर किटतक तीनाकिटतक, रेला चार पलटों व तिहाई सहित बजाना।
3. रूपक में साधारण परन लहरे के साथ बजाना। तथा एकताल में दो मुखड़े व दो तिहाई लहरे के साथ बजाना।
4. चौताल, धमार, सूलताल, तालों को पखावज वादन शैली अनुसार तबले पर बजाना।
5. दादरा तथा कहरवा में चार–चार लग्गियॉ तथा तिहाई।
6. एकताल एवं तिलवाड़ा तालों के ठेके विलम्बित एवं त्रिताल एवं एकताल के ठेकों को द्रुत लय में बजाने की क्षमता।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा